



## न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

अपील प्रकरण क्रमांक /2018 जिला - होशंगाबाद

अपील - 5277/2018/ होशंगाबाद/आ.अ.

मेसर्स सोम डिस्टलरीज प्राईवेट लिमिटेड  
सेहतगंज जिला - रायसेन (म.प्र.)

-- अपीलार्थी

विरुद्ध

- 1- उपायुक्त आबकारी, संभागीय उड़नदस्ता, भोपाल (म.प्र.)
- 2- सहायक आबकारी आयुक्त जिला - होशंगाबाद म.प्र.
- 3- जिला आबकारी अधिकारी मेसर्स सोम डिस्टलरीज प्राईवेट लिमिटेड सेहतगंज जिला - रायसेन (म.प्र.)

-- प्रत्यर्थागण

मेसर्स सोम डिस्टलरीज प्राईवेट लिमिटेड को  
आज दिनांक 25.8.18 को  
प्रस्तुत प्रारंभिक तर्क हेतु  
दिनांक 06.9.18 नियत।

राजस्व मण्डल, म.प्र. ग्वालियर  
25.8.18

न्यायालय/कार्यालय आबकारी आयुक्त, मध्यप्रदेश ग्वालियर द्वारा पृष्ठां. क्रमांक 5 (1)/2018-19/3825 में पारित आदेश दिनांक 24.07.2018 के विरुद्ध मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 62 के अन्तर्गत बने अपील रिवीजन तथा रिट्यू नियमों के पैरा (2) सी के अन्तर्गत अपील।

न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश-ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक अपील 5277/2018/होशंगाबाद/आ.अ.

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
26/6/19	<p>अपीलार्थी द्वारा यह अपील म.प्र. आबकारी अधिनियम, 1915 (जिसे संक्षेप में केवल अधिनियम कहा जायेगा) की धारा 62 (2)(सी) के अन्तर्गत आबकारी आयुक्त, म.प्र. ग्वालियर द्वारा पृष्ठांकन क्रमांक 5(1)2018-19/3825 में पारित आदेश दिनांक 24-7-2018 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है।</p> <p>2/ प्रकरण के तथ्य संक्षेप में इस प्रकार हैं कि अधीनस्थ न्यायालय ने पत्र क्रमांक 5(1)14-15/1153 दिनांक 30-3-2015 द्वारा वर्ष 2015-16 के लिए अपीलार्थी कम्पनी को उसे स्वीकृत प्रदाय क्षेत्र जिला होशंगाबाद के मद्यभाण्डागारों में एक दिन के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में रखने के निर्देश दिये गये थे। सहायक आबकारी आयुक्त, जिला होशंगाबाद के प्रतिवेदन के अनुसार अपीलार्थी कम्पनी द्वारा देशी मदिरा स्टोरेज होशंगाबाद पर माह अप्रैल, 2015 में, एक दिवस के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में नहीं रखा गया है। अपीलार्थी कम्पनी द्वारा की गई उक्त अनियमितता के संबंध में अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलार्थी कम्पनी को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया। अपीलार्थी का उत्तर समाधानकारक नहीं होने से अधीनस्थ न्यायालय ने पृष्ठांकन क्रमांक 5(1)2018-19/3825 में दिनांक 24-7-2018 को आदेश पारित कर अपीलार्थी कम्पनी द्वारा म.प्र. देशी स्पिरिट नियम, 1995 (जिसे संक्षेप में म.प्र. देशी स्पिरिट नियम कहा जायेगा) के नियम 4(4) का उल्लंघन किये जाने से नियम 12(1) के अंतर्गत दण्डनीय होने के कारण अपीलार्थी कम्पनी पर रुपये 15,000/- शास्ति अधिरोपित करने के साथ ही अपीलार्थी कम्पनी द्वारा उपरोक्त देशी मदिरा स्टोरेज मद्यभाण्डागार पर प्रश्नाधीन अवधि में कुल 28 दिन, एक दिवस के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत बोतलबंद देशी मदिरा संग्रह कांच की बोतलों में नहीं रखे जाने के कारण रुपये 250/- प्रतिदिन के मान से 7,000/- रुपये शास्ति अधिरोपित करते हुए कुल 22,000/- रुपये जमा करने के आदेश दिये गये। आबकारी आयुक्त के इसी आदेश के विरुद्ध यह अपील इस न्यायालय में प्रस्तुत की गई है।</p> <p>3/ अपीलार्थी कम्पनी के विद्वान अभिभाषक द्वारा मुख्य रूप से तर्क प्रस्तुत किया गया कि अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलार्थी कम्पनी को सुनवाई का समुचित अवसर दिये बिना ही आलोच्य आदेश पारित किया गया है, अतः</p>	

*(Handwritten mark)*

*(Handwritten signature)*

अधीनस्थ न्यायालय का आदेश अवैध, अनुचित एवं विधि विपरीत है। यह भी कहा गया कि अपीलार्थी कम्पनी द्वारा कांच की बोतलों में निर्धारित संग्रह रखा गया था, जिस कारण प्रश्नाधीन अवधि में किसी भी फुटकर ठेकेदार द्वारा देशी मदिरा का प्रदाय कांच की बोतलों में प्राप्त हेतु कोई आवेदन पत्र प्राप्त नहीं हुआ है। मद्यभाण्डागारों पर एक दिन के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में रखा जाना आपातकालीन स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए विहित वैधानिक व्यवस्था है, जिसका पालन आसवक द्वारा किया गया। तर्क में यह भी कहा गया कि आबकारी आयुक्त द्वारा निविदा की शर्त क्रमांक 6(v) पर बिना विचार किये अपीलार्थी कम्पनी पर शास्ति अधिरोपित करने में भूल की गई है। यह तर्क भी प्रस्तुत किया गया कि किसी प्रदाय क्षेत्र में मदिरा प्रदाय विफल नहीं हुआ है, न ही शासन को राजस्व की कोई हानि हुई है और न ही किसी लायसेंसी द्वारा हुए नुकसान की पूर्ति की मांग शासन से की गई है, इस कारण अपीलार्थी कम्पनी पर शास्ति अधिरोपित नहीं की जा सकती। इस तर्क के समर्थन में ए.आई.आर. 1970 सुप्रीम कोर्ट 253, ए.आई.आर. 1980 सुप्रीम कोर्ट 346, 1985 सुप्रीम कोर्ट 285 एवं 1990 सुप्रीम कोर्ट 1979 के न्याय दृष्टांतों का उल्लेख किया गया। यह भी कहा गया कि शासन को क्या हानि हुई है, यह प्रमाण भार शासन पर था, जिसे शासन द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सका है। तर्क में यह भी कहा गया कि उभय पक्ष के मध्य एक संविदा है और भारतीय संविदा अधिनियम, 1972 की धारा 74 के प्रावधानों के संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ए.आई.आर. 1970 सुप्रीम कोर्ट 1955 एवं ए.आई.आर. 1973 सुप्रीम कोर्ट 1098 में यह न्यायिक सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है कि जब राज्य शासन को कोई हानि ही नहीं हुई है तब अपीलार्थी कम्पनी पर शास्ति नहीं लगाई जा सकती। यह तर्क भी प्रस्तुत किया गया कि संविदा दोनों पक्षों पर बंधनकारी है, जिसके अंतर्गत किसी एक पक्ष को हुई हानि के लिए उस सीमा तक हानि की वसूल की जा सकती है, मनमाने ढंग से शास्ति नहीं लगाई जा सकती है। यह भी कहा गया कि 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में रखने जाने के पीछे मंशा यह थी कि आपातकालीन परिस्थितियों में मदिरा का प्रदाय प्रभावित न हो, किन्तु यह भी देखा जाना चाहिए कि उसका व्यवहारिक महत्व क्या है और इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शासन द्वारा वर्ष 2018-19 हेतु जारी निविदा में 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में रखे जाने के प्रावधान को विलोपित कर दिया है। अन्त में तर्क प्रस्तुत किया गया कि अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलार्थी कम्पनी की ओर से प्रस्तुत जवाब एवं दस्तावेज पर बिना विचार किए मनमाने रूप से आदेश प्रारित किया है, जो कि अवैधानिक एवं अनियमित होकर निरस्त किए जाने

योग्य है ।

4/ प्रत्यर्थी शासन के विद्वान अभिभाषक द्वारा लिखित तर्क में मुख्य रूप से निम्नलिखित आधार उठाए गए हैं:-

1. देशी स्पिरिट के नियम 4(4) जो कि आज्ञापक उपबंध है, के अनुसार-

4. Manufacture, working & Control:---

(4) The license shall maintain at the distillery the minimum stock of spirit as prescribed by the Excise Commissioner from time to time."

2. अपीलार्थी इकाई वर्ष 2015-16 के लिए सी.एस. 1 लाइसेंस प्रयाय किया गया था और सी.एस. 1 लाइसेंस की शर्त के अनुसार इकाई को 1 दिवस के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतल को रखा जाना आवश्यक था।

4. सहायक आबकारी संभागीय उड़नदस्ता के प्रतिवेदन के अनुसार अपीलार्थी कम्पनी द्वारा होशंगाबाद देशी मदिरा स्टोरेज मदिरा भाण्डागार पर प्रश्नाधीन अवधि में कुल 28 दिवस बोतलबंद देशी मदिरा का न्यूनतम स्टॉक कांच की बोतलों में नहीं रखा गया है ।

5. उपरोक्तानुसार इकाई को आबकारी आयुक्त द्वारा कारण बताओ सूचना पत्र प्रेषित करते हुए 7 दिवस के भीतर उत्तर प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया गया था, जिसकी तामीली अपीलार्थी के अधिकृत प्रतिनिधि को कराई गई है ।

6. अपीलार्थी के उपरोक्त कृत्य को आबकारी आयुक्त द्वारा म.प्र. देशी स्पिरिट नियम 1995 के नियम 4(4) का उल्लंघन है और उपरोक्त आधार पर नियम 12(1) के अधीन दण्डनीय होना मान्य किया गया और उपरोक्तानुसार मद्यभाण्डागार पर 28 दिवस का न्यूनतम स्टॉक भण्डार नहीं पाया गया और उपरोक्त के आधार पर 250/- रुपये प्रतिमाह के हिसाब 7,000/- रुपये एवं न्यूनतम स्टॉक नहीं रखे जाने से 15,000/- रुपये शास्ति अधिरोपित कर कुल 22,000/- की शास्ति अधिरोपित की गई ।

7. उपरोक्त अधिरोपित इकाई के म.प्र. देशी स्पिरिट नियम का उल्लंघन किये जानेसे 4(4) का उल्लंघन किये जाने से नियम 12(1) अनुसार यह दण्डनीय होने से उपरोक्त के आधार पर अनियमितता एवं विहित प्रावधानों के उल्लंघन होने पर इकाई पर 22,000/- रुपये की शास्ति अधिरोपित की गई है ।

8. अपीलार्थी द्वारा अपील में अपीलार्थी के साथ आबकारी आयुक्त के समक्ष कोई भी प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया, जिससे यह दर्शित हो कि अपीलार्थी द्वारा विहित वैधानिक नियमानुसार 25 प्रतिशत का संग्रह कांच की बोतल में रखा गया और न ही ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे यह दर्शित हो कि अपीलार्थी द्वारा उपरोक्त नियम का उल्लंघन नहीं किया गया है । अपीलार्थी






द्वारा मेमों में वर्णित न्याय दृष्टांत माननीय उच्च न्यायालय द्वारा याचिका क्रमांक 60/2016 मेसर्स सोम डिस्टिलरीज आदि में विचारण में लेते आदेश पारित किया गया है और उपरोक्त माननीय उच्च न्यायालय द्वारा यह निर्धारित किया गया है कि नियम 12 स्पिट नियम 1995 का उल्लंघन होने के कारण शास्ति अधिरोपित की गई, जिसमें व्यक्तिगत हानि आवश्यक नहीं है और शास्ति अधिरोपित किए जाने से नियम का उल्लंघन किए जाने हेतु पर्याप्त है। उनके द्वारा अपील निरस्त कर अधीनस्थ न्यायालय का आदेश स्थिर रखने का अनुरोध किया गया।

5/ उभय पक्ष द्वारा प्रस्तुत तर्कों के संदर्भ में अभिलेख का अवलोकन किया गया। अभिलेख से स्पष्ट है कि अपीलार्थी कम्पनी द्वारा देशी मदिरा स्टोरेज मद्यभाण्डागार होशंगाबाद पर माह अप्रैल, 2015 में कुल 28 दिन, एक दिवस के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत बोतलबंद देशी मदिरा संग्रह कांच की बोतलों में नहीं रखा गया है, जबकि म.प्र. देशी स्पिट नियमों के नियम 4(4) के अनुसार प्रदाय संविदाकार द्वारा स्टोरेज मद्य भाण्डागार में एक दिन के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में रखना अनिवार्य है। भले ही अपीलार्थी द्वारा स्टोरेज मद्य भाण्डागार में एक दिन के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह कांच की बोतलों में नहीं रखने से शासन को राजस्व की हानि नहीं हुई हो, परन्तु अपीलार्थी कम्पनी को विहित वैधानिक व्यवस्था का पालन करना आवश्यक है, जिसका पालन अपीलार्थी कम्पनी द्वारा नहीं किया गया है। अतः अपीलार्थी कम्पनी का उक्त कृत्य म.प्र. देशी स्पिट नियमों के नियम 4(4) का उल्लंघन होकर नियम 12(1) के तहत दण्डनीय होने के कारण अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलार्थी कम्पनी पर 15,000/- रुपये शास्ति अधिरोपित करते हुए अपीलार्थी कम्पनी द्वारा देशी मदिरा स्टोरेज भाण्डागार होशंगाबाद में उपरोक्त अवधि में कुल 28 दिवस कांच की बोतलों में एक दिवस के औसत प्रदाय का 25 प्रतिशत संग्रह नहीं रखने से 250/- रुपये प्रतिदिन के मान से 7,000/- रुपये अधिरोपित करते हुए कुल 22,000/- रुपये जमा करने के जो आदेश दिये गये हैं, वह उचित होने से उसमें हस्तक्षेप की कोई आवश्यकता नहीं है। अतः इस संबंध में अपीलार्थी कम्पनी द्वारा प्रस्तुत तर्क मान्य किये जाने योग्य नहीं है। दर्शित परिस्थिति में अधीनस्थ न्यायालय का आदेश दिनांक 24-7-2018 उचित होने से स्थिर रखा जाता है। अपील निरस्त की जाती है।



  
(मनोज गोयल)

अध्यक्ष